मैथिली (100)
कक्षा - 12

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
19-02-21

प्रकरण - बाल-लीला

कतोक दिवस जखन बिति गेल
हरि पुनु हथगर जोड़गर भेल
से कोन ठाम जतय नहि जाथि
कय बेरि अंगनहुँसँ बहराथि

बाल-लीला शीर्षक कविता कृष्णजन्मक तृतीय अध्यायसँ लेल गेल अछि। कृष्णजन्मक रचनाकार वा कवि मनबोध छथि। मैथिली काव्य-जगतमे मनबोधक विशिष्ट स्थान छन्हि। मैथिली साहित्यमे बाल काव्यक श्रीगणेश हिनकेँ देन छन्हि। कृष्णक बाल्य रूपक अत्यन्त स्वाभाविक चित्र अंकित केने छथि। कृष्णजन्मक पश्चात हुनक शरीरक विकासक वर्णन कवि बाललीलामे कयलनि अछि। श्रीकृष्ण किछु दिनक पश्चात् हाथ पएर चलबए लगलाह। कृष्णक जतय दृष्टि जाइनि ततय ओ गुड़कल-गुड़कल चलि जाथि। कतेको बेर आँगनसँ बाहर भऽ बाहर चलि जाथि। हुनक एहि भगबाक प्रतिक्रियाकेँ देखि यशोदाजी दरबज्जा परसँ हुनका पकड़ि-पकड़ि आंगन लऽ अबथि।